

## क्रिप्टोकॉरेंसी के कारण 'डॉलरीकरण'

### प्रलिस के लयः

आरबीआई, डॉलरीकरण और डी-डॉलरीकरण, क्रिप्टोकॉरेंसी, फॉरेक्स रज़रव ।

### मेन्स के लयः

क्रिप्टोकॉरेंसी के कारण डॉलरीकरण, भारत के हतों पर देशों की नीतयों और राजनीतका प्रभाव ।

## चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारतीय रज़रव बैंक (RBI) ने संसदीय पैनल को बताया कक्रिप्टोकॉरेंसी अर्थव्यवस्था के हसिसे का "डॉलरीकरण" कर सकती है जो भारत के संप्रभु हति के खलाफ होगा ।

## डॉलरीकरण:

- डॉलरीकरण मुद्रा प्रतसि्थापन का रूप है, जहाँ डॉलर का उपयोग कसी देश की स्थानीय मुद्रा के अतरकित या उसके स्थान पर कया जाता है ।
  - यदयपकिई अर्थव्यवस्थाएँ काफी हद तक डॉलरीकृत हैं फरि भी केवल लाइबेरया और पनामा जैसे टैक्स हेवन देशों को सही अर्थों में 'डॉलरीकृत' के रूप में परभाषति कया जा सकता है ।
- वास्तव में दो-तहिई डॉलर संयुक्त राज्य अमेरिका जो कइसे जारी करता है, के बाहर रखे जाते हैं ।
  - बोलीवया जैसे देश जो अतमुद्रास्फीतके शकार हुए हैं, का भी डॉलरीकरण हो गया है, यहाँ 80% से अधिक मुद्रा का उपयोग डॉलर के रूप में कया जा रहा है ।

## डी-डॉलरीकरण:

- यह वैश्वकि बाज़ारों में डॉलर के प्रभुत्व को कम करने के लयि संदरभति है । यह अमेरिका डॉलर को मुद्रा के रूप में प्रतसि्थापति करने की एक प्रकरया है जसिका उपयोग नमिन हेतु कया जाता है:
  - व्यापारकि तेल और/या अन्य वस्तुएँ
  - वदिशी मुद्रा भंडार** हेतु अमेरिका डॉलर खरीदना
  - दवपिकषीय व्यापार समझौते
  - डॉलर मूल्यवरग की संपतति
- वैश्वकि अर्थव्यवस्था में डॉलर की प्रभुत्वशाली भूमिका अमेरिका को अन्य अर्थव्यवस्थाओं पर असंगत प्रभाव रखने का अवसर देती है । अमेरिका लंबे समय से अपने वदिश नीत लकष्यों की प्राप्तके लयि प्रतबिंधों को एक साधन के रूप में इस्तेमाल करता रहा है ।
  - डी-डॉलरीकरण वभिन्न देशों के केंद्रीय बैंकों को भू-राजनीतकि जोखमिों से बचाने की भावना से प्रेरति है, जहाँ एक आरकषति मुद्रा के रूप में अमेरिका डॉलर की स्थतिका आक्रामक हथयार के रूप में इस्तेमाल कया जा सकता है ।

## डॉलरीकरण का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव:

- अपनी मौजूदा मुद्रास्फीतकी समस्याओं के बावजूद भारत काफी हद तक डॉलरीकरण से बहुत दूर है ।
  - हालाँकि कुछ शोध पत्रों के अनुसार, भारतीय नरियात-आयात (EXIM) लेन-देन में डॉलर का दबदबा है ।
- भारतीय आयात और नरियात दोनों ही गतवधियों लगभग 86% डॉलर में ही की जाती हैं ।
- भारत, अमेरिका को 15% नरियात और वहाँ से केवल 5% ही आयात करता है ।
  - यह दर्शाता है क वदिशों में डॉलर की लोकप्रयिता के भय से कुछ देश अंतर्राष्ट्रीय लेन-देन के लयि अपनी मुद्राओं का उपयोग करते हैं ।

## संबंधित चर्चाएँ:

- **वित्तीय प्रणाली की स्थिरता के लिये चुनौतियाँ:**
  - उच्च डॉलरीकरण वाली अर्थव्यवस्थाओं के केंद्रीय बैंक बना शक्ति के नकियाय बन जाते हैं।
  - क्रिप्टोकॉइन्स में वनिमिय का माध्यम बनने तथा घरेलू और सीमा पार वित्तीय लेन-देन में रुपए को प्रतिस्थापित करने की क्षमता है।
    - यही कारण है कि आरबीआई ने इसका वरिध कया है तथा भारतीय वित्त मंत्रालय ने भारत में आधिकारिक तौर पर इसे 'अनुमति' दिये बिना 30% क्रिप्टो टैक्स लगाकर उसका समर्थन कया है।
  - इस कदम का उद्देश्य **भारतीय रुपए से आभासी संपत्तियों को खरीदने से रोकना है**, जो वदेशी संस्थाओं के स्वामित्व में होगी, जिनमें यहाँ कर अधिकारियों द्वारा टैक नहीं कया जा सकता है।
  - कर/टैक्स उन व्यक्तियों पर लागू नहीं होता है जो क्रिप्टो की माइनिंग केवल इसे पाने के लिये करते हैं बल्कि यह उन पर लागू होता है जो इसे प्राप्त करने या इसमें व्यापार करने के लिये भारतीय रुपए को खर्च करते हैं।
- **देश के वित्तीय क्षेत्र के लिये खतरा:**
  - **आतंक के वित्तपोषण, मनी लॉन्ड्रिंग और मादक पदार्थों की तस्करी** के लिये इस्तेमाल होने के अलावा क्रिप्टो देश की वित्तीय प्रणाली की स्थिरता हेतु एक बड़ा खतरा है।
- **बैंकिंग प्रणाली पर नकारात्मक प्रभाव:**
  - इसका बैंकिंग प्रणाली पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा क्योंकि आकर्षक संपत्ति होने के कारण लोग अपनी मेहनत की कमाई को इन मुद्राओं में निवेश कर सकते हैं जिसके परिणामस्वरूप बैंकों के पास उधार देने के लिये संसाधनों की कमी हो सकती है।
    - भारत में अनुमानित रूप से **15 मिलियन से 20 मिलियन क्रिप्टो निवेशक** हैं, जिनकी कुल क्रिप्टो होल्डिंग लगभग 5.34 बिलियन अमेरिकी डॉलर है।

## आगे की राह

- अमेरिकी डॉलर अभी भी व्यापार के लिये पसंदीदा मुद्रा है क्योंकि कोई अन्य मुद्रा पर्याप्त रूप से तरल नहीं है। अगर किसी मुद्रा में तरलता है भी तो राष्ट्रों में यह आशंका बनी रहती है कि कहीं वह मुद्रा अमेरिकी डॉलर का प्रतिरूप न बन जाए।
- विश्व केवल व्यवस्था में परिवर्तन नहीं चाहता जहाँ अमेरिका के बजाय अब किसी दूसरे देश के वैसे ही छल-कपट भोगने पड़ें। आगे बढ़ने का एकमात्र तरीका यह है कि मुद्रा बाज़ार में विविधता लाई जाए जहाँ कोई एक मुद्रा आधिपत्य का दावा न करे।

## स्रोत: इकॉनोमिक टाइम्स

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/dollarisation-due-to-cryptocurrencies>

